Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 8 | AUGUST 2024

परसाई : विचार भी, व्यंग भी

डॉ. शिल्पी शुक्ला [1]

[1] अतिथि व्याख्याता, हिन्दी विभाग, छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
27th August 2024	30th August 2024

परिचय

व्यंग्य साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण विधा है जो अपने समय और समाज से सीधे टकराती है। समाज की विसंगतियों, भ्रष्टाचार, सामाजिक शोषण अथवा राजनीति के गिरते स्वर की घटनाओं पर अप्रत्यक्ष रूप से तंज या व्यंग्य किया जाता हैं। साधारण तथा लघु कथा की तरह संक्षेप में घटनाओं पर व्यंग्य होता है जो हास्य नहीं, कभी कभी आक्रोश भी पैदा करता है। व्यंग्य श्रेष्ठ साहित्य की जान है या यह भी कह सकते है कि जो भी कहानियां, उपन्यास, कविता आदि साहित्यिक स्तर पर श्रेष्ठ मानी गई है, उनमें व्यंग्य की रोचक तथा शालीन भाषा का प्रयोग है। व्यंग्य सहृदय के भीतर संवेदना, आक्रोश एवं संतुष्टि का संचार करता है हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का उदय भारतेंदु-युगीन परिस्थितियों की उपज है। साहित्य में व्यंग्य सदैव से ही उपस्थित रहा लेकिन पहचान उसे बहुत देर से मिली। व्यंग्य को विधा के स्वरूप प्रतिष्ठापित किया यशस्वी व्यंग्यकार हरिशंकर परिसाई जीने। परसाई जी ने स्वांतत्र्योत्तर भारत को युगधर्मी साहित्यकार की दृष्टि से देखा और आजादी को केवल अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति मात्र नहीं केवल व्यक्ति की स्वतंत्रता मात्र नहीं मानकर सच्चें मानवीय मुल्यों की प्रतिष्ठा, शोषणविहीन और समतामूलक समाज के रूप में चाहा । लेकिन स्थितियां और घटनांए इसके विपरीत रही। यही विडंबनाएं व्यंग्य का ऐतिहासिक आधार है। परसाई जी इस विडंबना को सबसे निकटता से देखने वाले, उस पर आघात करने वाले, उस पर आघात करने वाले, विक्षुब्ध होने वाले रचनाकार है। उन्होंने अपने दौर की प्रायः प्रत्येक उल्लेखनीय घटना और व्यक्तित्व पर विचार किया।

हरिशंकर परसाई जी के साहित्य में आजादी के बाद का राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक परिवेश चित्रित हुआ है। किसी भी साहित्यकार पर समसामयिक घटनाओं का प्रभाव सर्वाधिक होता है। जीवन के संघर्ष विचारधारा को दिशा निर्देशित करते है। परसाई जी माक्र्सवादी विचारधारा से प्रभावित है।

हरिशंकर परसाई जी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य जगत के एक प्रतिभा संपन्न और युगधर्मी व्यंग्यकार हैं। उन्होंने अपने समय की सच्चाइयों को लोगों के सामने रखने के लिए व्यंग्य को माध्यम बनाया क्योंकि व्यंग्य वह साहित्य विधा है जो आधुनिक संदर्भों की सच्चाई के साथ प्रस्तुत करती है। हिन्दी व्यंग्य को एक नई दिशा और नया आयाम प्रस्तुत कर उन्होंने व्यंग्य को चर्चा की महत्वपूर्ण विषय बना दिया। उन्होनें व्यंग्य का प्रयोग सामाजिक परिवर्तन के अस्त्र के रूप में किया न कि सुधार के उद्देष्य के रूप में। 'परिवर्तनशीलता तथा प्रगतिशीलता में परसाई जी का दृढ़ विश्वास था।' उन्होंने स्वयं को लेखक के नाते सारे सामाज के क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए अपना दायित्व माना है। संपूर्ण स्थितियां उनके साहित्य में स्पष्ट दिखती हैं। उन्होनें देश में पनप रही बदसूरती को निकट से देखा नग्न-यथार्थ का निकट से सूक्ष्म निरीक्षण किया। अपने समय की राजनीति में पनप रहीं विद्रूपताओं और विकृतियों को तिलमिला देने वाली तीखी और आक्रोशपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए व्यंग्य को माध्यम बनाया। यह हथियार परसाई जी ने अमोघ शास्त्र सा साबित हुआ। क्योंकि कांतिकुमार जैन का मानना है कि 'परसाई जी के साहित्य को पढ़ने के बाद कोई भी पाठक पहले जैसा नहीं रह सकता। यानी उसकी मानसिक स्थिति में अवश्य प्रगतिशील बदलाव आयेगा।''

साहित्य परसाई के लिए वाग्विलास की वस्तु बल्कि एक गंभीर जिम्मेदारी है। जो व्यक्ति इस जिम्मदारी को कर्तव्य समझ कर निभाता है वही सच्चा साहित्यकार कहलाने का अधिकारी होता है। निबंध में विचारों को संप्रेषित करने की अधिक आजादी रहती है। परसाई जी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक सभी विषयों पर निबंध लिखे है फिर भी राजनैतिक पृष्ठभूमि पर उनके निबंध संख्या में अधिक हैं। क्योंकि परसाई राजनीति को मनुष्य की जिन्दगी में महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में देखते है। शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जहां पर राजनीति की दखलंदाजी न हो, इसलिए वह राजनीति पर सबसे अधिक व्यंग्य करते है। संसार की कोई भी महत्वपूर्ण घटना नहीं जिस पर परसाई की नजर न पड़ी हो। मेरी जानकारी में इतना सुक्ष्म ज्ञान एवं दुनिया की राजनीति की वास्तविकताओं से परिचित अन्य कोई लेखक नहीं हैं। परसाई जी के लेखन का भारत के सामाज की सहज और कलात्मक अभिव्यक्ति है। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा स्वतंत्रता के बाद सामाजिक चेतना में विकास का महतवपूर्ण कार्य किया है। परसाई की कहानियां आम आदमी से सीधे तादात्मय स्थापित करती है। आम आदमी का चरित्र परसाई की कहानियों का केन्द्र बिन्दु है। जिसमें शोषित पक्ष की आहे और कराहे आसानी से सुनी जाती है। लेकिन यह कहानियां उस आम आदमी में कहीं भी दयनीयता, निराश या कुंठा में नहीं ले जाती बल्कि संघर्ष करके, अपने अधिकारों को छीनने के लिये तैयार करती हैं। क्रांति के लिए अग्रदूत की भूमिका निभाती हैं। उनकी प्रत्येक रचना जीवन के यथार्थ की प्रस्तुति है। परसाई जी ने बहुत बड़े पैमानों पर पढ़े-लिखे समुदाय को अपने आस-पास के सच्चाई के बारे में सजग किया, शिक्षित किया है एक नई चेतना पैदा की है। जितना लोक शिक्षण परसाई जी के स्तंभों ने किया है अन्य किसी ने नहीं। यही परसाई जी का समाज के प्रति सच्चा उत्तरदायित्व था जिसे उन्होंने अपने अंमि दिनों तक निभाया। वस्तुस्थिति को देखने, समझने एवं विश्लेषित करने का उनका प्रगतिशील नजरिया ही उनके लेखन की शक्ति हैं।

परसाई जी का साहित्य-फलक विस्तृत एवं व्यापक हैं। अभी परसाई जी को समझने और उनके साहित्य के सच्चे और संपूर्ण मूल्यांकन के लिये और अधिक समझ, व्यापक दृष्टि, तार्किक विश्लेषण की आवश्यकता है तभी सच्चे अर्थों में परसाई जी के साथ न्याय हो

पायेगा।

परसाई का समग्र रूप अनूठा है। उनके पास स्मृति है और तर्क है, तर्क मनहुसी को काटता है और चपल विनोद-वृत्ति तथा ठाठदार हास्य की शैली से आगे बढ़ जाता है। प्यार और भक्ति के समुद्र के बीच परसाई में अपनी ज्वलन्त और मौलिक खड़ी बोली में भारतीय समाज की असंख्य पेंटिग्स बना ड़ाली। प्रेमचन्द्र के बाद वे हिन्दी में सबसे अधिक पढ़े जानेवाले रचनाकार है।

हरिशंकर परसाई के दिवंगत होने के बाद अब जबकि काफी समय गुजर गया है, स्पष्ट रूप से उनकी रचनाओं पर बहुत गंभीर विमर्श हो सकता है परसाई के बारे में एक विचारक ने यह टिप्पणी की थी कि स्वतंत्रता के बाद के भारत को अगर जानना हो तो वह परसाई की रचनाओं में दिखेगा। परसाई के व्यंग्य कथा संग्रह सदाचार का ताबीज, जैसे उनके दिन फिरे, और प्रेमचंद के फटे जूते जिसमें गद्य की लगभग सभी विद्याओं की प्रतिनिधि व्यंग्य रचनाए हैं।

REFERENCES

1. परसाई हरिशंकर - ऐसा भी सोचा जाता है, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली द्वितीय संस्करण 1994

2. परसाई हरिशंकर - वैष्णव की फिसलन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली प्र.सं. 1976

3. परसाई हरिशंकर - शिकायत मुझे भी है, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली द्वितीय संस्करण 1976.